

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি॥

॥শ্রী-কামাসিকাষ্টকম্ ॥

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
॥श्री-कामासिकाष्टकम् ॥

श्रीमान् रेक्कटनाथार्यः करितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यरयो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥

श्रुतीनामुत्तरं भागं रेगरत्याश्च दक्षिणम्।
कामादधिरसन् जीयात् कश्चिदद्भुतकेसरी ॥ १ ॥

तपनेन्द्रमिनयनः तापानपचिनोतु नः।
तापनीयरहस्यानां सारः कामासिकाहरिः ॥ २ ॥

आकठमादिपुरुषं
कठीररमुपरि कुठितारातिम्।
रेगोपकठसम्प्रात
विमुक्तैरेकुठ बह्मतिमुपासे ॥ ३ ॥

बन्धुमखिलस्य जन्तोः
बन्धुरपर्यङ्कबन्धुरमगीयम्।
विषमविलोचनमीडे
रेगरतीपुलिनकेलिनरसिंहम् ॥ ४ ॥

स्वस्थानेषु मरुदगणान् नियमयन् स्वाधीनसरेन्द्रियः
पर्यङ्कस्त्रिधारणाप्रकटितप्रत्यङ्गुथारस्थितिः।
प्रायेण प्रणिपेदुषां प्रभुरसौ योगं निजं शिक्षयन्
कामानातनुतादशेषजगतां कामासिकाकेसरी ॥ ५ ॥

विकस्वरनखस्वरङ्गतहिरण्यरङ्गः श्ली-
निरगलरिनिर्गलद्रुधिरसिन्धुसक्त्यायिताः।
अरन्तु मदनासिकामनुजपथंरक्तस्य माम
अहस्पृथमिकामिथः प्रकटिताहरा बाहरः ॥ ६ ॥

सटापटलभीषणे सरभसाट्टहासोद्धटे
स्फुरतक्रुधि परिस्फुटद्भुकुटिकेपि रक्ते कृते।

কৃপা কপটকেসরিন্ দনুজডিভুদত্তুনা
সরোজসদৃশা দৃশা ব্যতিভিষজ্য তে ব্যজ্যতে ॥ ৭ ॥

অযি রক্ষতি রক্ষকৈঃ কিমন্যৈঃ
অযি চারক্ষতি রক্ষকৈঃ কিমন্যৈঃ।
ইতি নিশ্চিতধীঃ শ্রয়ামি নিত্যং
নহরে বেগবতীতটশ্রযং ত্বাম্ ॥ ৮ ॥

ইথং স্তুতঃ সকৃদিহাষ্টভিৰেষ পদ্যৈঃ
শ্রীবেঙ্কটেশরচিতৈস্ত্রিদশেন্দ্রবন্দ্যঃ।
দুর্দান্তঘোরদুরিতদ্বিরদেদ্রভেদী
কামাসিকানরহরিবিতনোতু কামান্ ॥ ৯ ॥

॥ ইতি শ্রী-কামাসিকাপ্তকম্ সমাপ্তম্ ॥

কবিতার্কিকসিংহায় কল্যাণগুণশালিনে।
শ্রীমতে বেঙ্কটেশায় বেদান্তপুরে নমঃ ॥